>

Title: Economic disparities in the country.

श्री हुक्मदेव नारायण यादव : उपाध्यक्ष महोदय, मैं सदन का और देश का ध्यान बहुत ही महत्वपूर्ण विषय की ओर दिलाना चाहता हूं। सौभाग्य से आदरणीय वित्त मित्र जी भी सदन में मौजूद हैं। जितनी देश में समस्याएं हैं, उनमें सबसे बड़ी समस्या अमीरी और गरीबी की, उद्योग और कृषि की, शहर और गांव की आमदनी में जो विषमता बढ़ती जा रही है और उसमें जो इतनी लम्बी-चौड़ी खाई हो गई है, इन सारे विषयों पर सदन में बहस होती है, लेकिन अमीरी-गरीबी की विषमता कैसे मिटे,

उद्योग, व्यवसाय और कृषि में जो विषमता है, उनकी आय में जो फर्क है, वह कैसे कम हो? गांव और शहर में जो विषमता है और उनकी आय में जो फर्क है, उसे कैसे कम किया जाए? अगर इन तीनों विषमताओं को कम नही किया जाएगा, खाई को पाटने का प्रबंध नहीं किया जाएगा, तो देश की संपूर्ण अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी। हिंदुस्तान में कुछ नहीं बचेगा। आने वाले दस वर्षों में इन्हीं समस्याओं पर इस देश में गृहयुद्ध होने की स्थिति पैदा हो जाएगी। सारा देश जल जाएगा ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया संक्षेप में अपनी बात कहिए।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव : क्योंकि किसान मर रहा है, गांव वाला मर रहा है, गरीब मर रहा है और कुछ लोग मालामाल हो रहे हैं। इस पर सदन में विशेष रूप से बहस होनी चाहिए। नियम 193 की नोटिस हम लोगों ने दी है, उसको चर्चा में लेकर सरकार इस पर बहस कराये। यही शून्य काल का मेरा प्रश्न है।

उपाध्यक्ष महोदय : श्री अर्जुन राम मेघवाल, डॉ. राजन सुशान्त अपने आपको श्री हुक्मदेव नारायण यादव जी के विषय के साथ संबद्ध करते हैं।